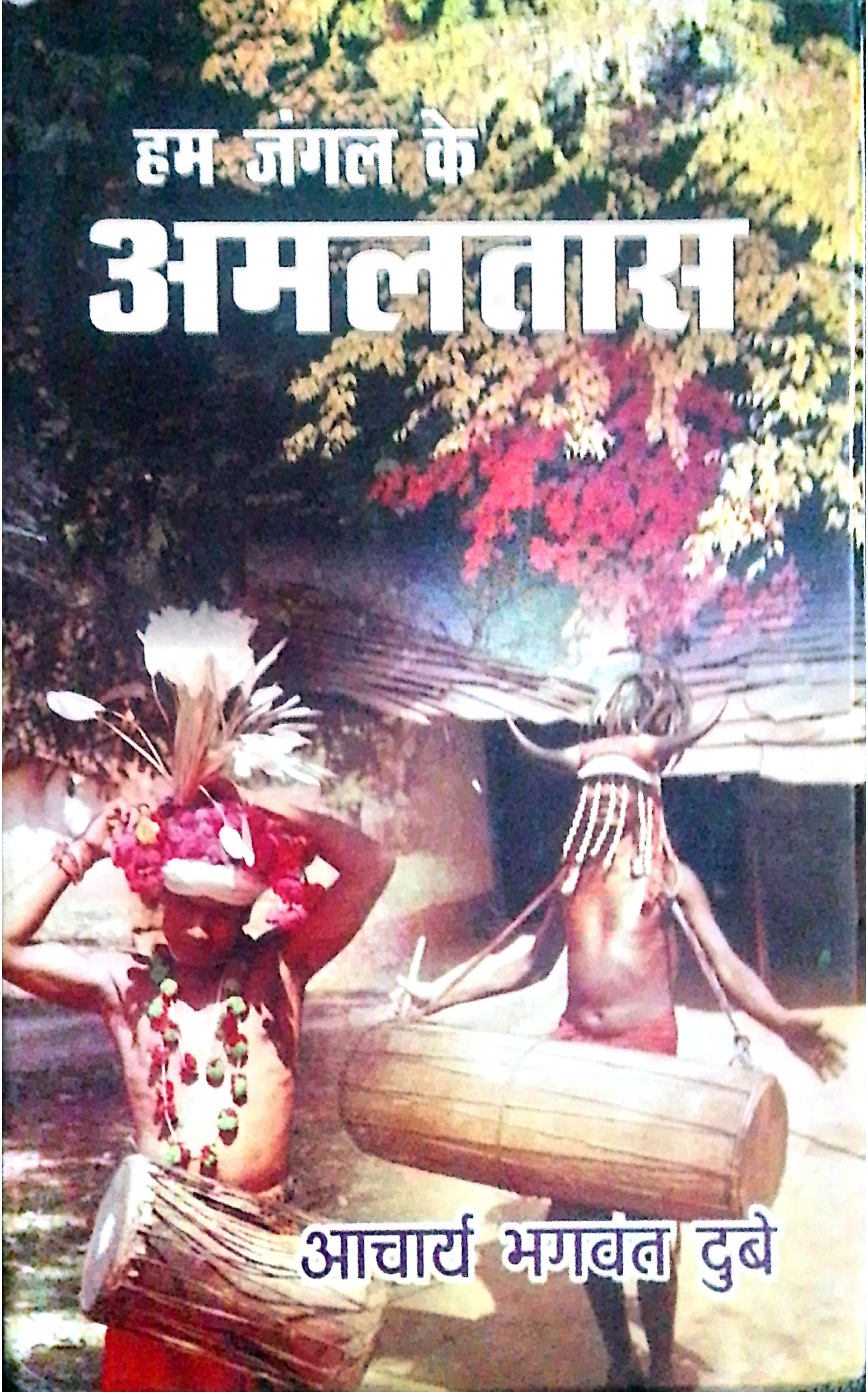

Scanned with OKEN Scanner

कृति - हम जंगल के अमलतास
(नवगीत संग्रह)

कृतिकार - आचार्य भगवत दुबे

संस्करण - 2008

प्रकाशक - कादम्बरी, जबलपुर (म.प्र.)

मूल्य - 150 रुपये मात्र

स्वत्वाधिकार - आचार्य भगवत दुबे

मुद्रक - महाकोशल ऑफसेट,
शुभंकर कॉम्पलेक्स, राइट टाउन, जबलपुर

अक्षर संयोजन - देवेन्द्र दुबे (दुबे कम्प्यूटर्स)
मो. 9926938789

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ
ध्वजा नवगीत की	19
हम जंगल के अमलतास	20
जहाँ लोकरस रहते शहदीले	21
हार न मानी अच्छाई ने	22
ममता का छप्पर	23
बेड़ियाँ न डालिये	24
नंगपन ऊँचे महल का शील है	25
वृक्ष मेघ क्वांर के	26
वक्त यह बहरूपिया	27
यातनाओं की सुई	28
हम त्रिशंकु जैसे तारे हैं	29
नयन लाज के भी झुक जाते	30
स्वार्थी सब शिखरस्थ हुए	31
हवा हुई ज्वर-ग्रस्त	32
मार्गदर्शन मनचलों का	33
आचारण आदर्श के बौने हुए	34
पसलियाँ बचीं	35
खर्राटे भर रहे पहरुए	36
समय क्रूर डाकू ददुआ	37
दिल्ली तक जायेंगी लपटें	38
ओछे गणवेश	39
नाग हवाओं के	40
सूर्य का बिम्ब लगा चढ़ने	41
आहें भरती वनखंडी	42
तेवर हैं गर्म आसमान के	43
बर्बरता की हुई फतह	44
वह अभागा देश का मजदूर है	45
अपमानों वाले हथगोले	46
मौसम में कड़ुवाहट छायी	47
शत्रु के लिए काल बन जाते हैं	48
शांति अजा मिमियाती है	49
तृष्णा की मकड़ी	50
बंश के काँटे उगे	51
आँख में सुरभित वृन्दावन	52

Scanned with OKEN Scanner

शीर्षक	पृष्ठ
मेघ सिपाही बेंत मारते	53
बौराये आंगन घर-द्वारे	54
कोड़ों से उन्नति लिख दी	55
विषपायी अपने पुरखे	56
हम लोहे के चने चबाते	57
सद्भावों के फल	58
मजहब के घाटों पर	59
छा रही ध्वंसक घटाएँ	60
पराजित दृढ संकल्प हुए	61
आँख-आँख में अंगारे हैं	62
धूल चाटेगा अहम्	63
ग्रीष्म ने हमला किया	64
कुहराम सुनाई देता है	65
जब आँखों में गाँव झूलता	66
मघवा के हरकारे	67
चक्रव्यूह षड्यंत्रों का	68
पंच करील हरे	69
जुल्म का अनुवाद	70
कितने निर्मम हैं ये कोल्हू	71
प्रजा मछलियों को	72
फिरते हैं नाग काले	73
कारएँ तोड़ें	74
काँटे सहलाते हैं	75
कितना ओछापन दिखता है	76
जिनके होते हाथ बड़े	77
बूढ़ा हुआ वसंत	78
ब्याज रहे भरते	79
नदियाँ निर्जला हुई	80
श्वेत हाथी राष्ट्र को चरते	81
भूखे शिशु के क्रन्दन जैसा	82
उलूकों के जहाँ पहरे	83
वृत्रा के वंश लगे बढ़ने	84
पत्थर की छाती है	85
क्रूर रातें हत्यारी हैं	86
झूलें श्याम घटाएँ	87
सठम् प्रति साठ्यम्	88

Scanned with OKEN Scanner

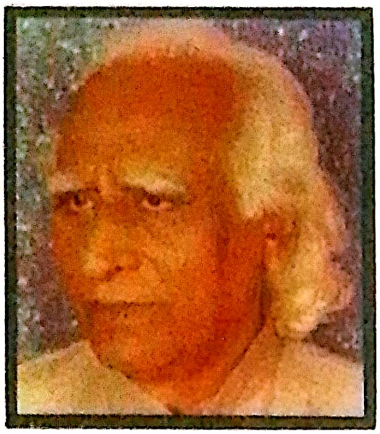

आचार्य भगवत दुबे

जन्म 18.8.1943 डगडगा हिनोता, जबलपुर (म.प्र.)
चर्चित महाकाव्य 'दधीचि' के प्रणेता आचार्य भगवत दुबे, समकालीन हिन्दी साहित्य में छान्दस कविता के सशक्त हस्ताक्षर, ख्यातिलब्ध दोहाकार, आंचलिक शैली के चर्चित कहानीकार, हिन्दी के बेहद कामयाब ग़ज़लकार एवं गीत/नवगीत के मर्मज्ञ शिल्पकार हैं।

प्रकाशित कृतियाँ :

1. **स्मृति गंधा** (गीत संग्रह), 2. **अक्षरमंत्र** (साक्षरता गीत-संग्रह), 3. **शब्दों के संवाद** (दोहा संग्रह), 4. **हरीतिमा** (पर्यावरण पर केन्द्रित), 5. **रक्षाकवच** (स्वास्थ्य शिक्षा पर केन्द्रित), 6. **संकल्पर्थी** (बनवासी एवं ग्राम्य जीवन पर केन्द्रित), 7. **बजे नगाड़े काल के** (जबलपुर की भूकम्प त्रासदी पर केन्द्रित), 8. **वनपाँखी** (जल, जंगल, जमीन, लोक संस्कृति, पर्यावरण विषयक), 9. **'दधीचि' महाकाव्य** (महर्षि दधीचि के आत्मोत्सर्ग पर केन्द्रित), 10. **जियो और जीने दो** (मानवाधिकार पर केन्द्रित), 11. **विषकन्या** (मद्य निषेध विषयक गीत-संग्रह), 12. **शंखनाद** (राष्ट्रीय गीत संग्रह), 13. **चुभन** (हिन्दी ग़ज़ल संग्रह), 14 **दूल्हादेव** (कहानी संग्रह), 15. **प्रणय ऋचाएँ** (गीत संग्रह), 16. **काँटे, हुए करीट** (गीत संग्रह), 17. **करुणायज्ञ** (जीव दया पर केन्द्रित), 18. **शब्द विहंग** (दोहा संग्रह), 19. **कसक** (ग़ज़ल संग्रह), 20. **हिन्दी तुझे प्रणाम** (काव्य संग्रह), 21. **शिकन** (ग़ज़ल संग्रह), 22. **हिरण सुगंधों के** (नवगीत संग्रह), 23. **घुटन** (ग़ज़ल संग्रह), एवं 24. **हम जंगल के अमलतास** (नवगीत संग्रह)

संपर्क : 2672 'विमल स्मृति' पिसनहारी-मढ़िया के पास जबलपुर
482003 (म.प्र.) मो.-9300613975, 9993400950

मुद्रक : महाकोशल ऑफसेट जबलपुर फोन .2412723

Scanned with OKEN Scanner